पद ४

(रागः कालंगडा – तालः त्रिताल) श्रीमाणिकाख्ये नतजनसख्ये। सुरमखमुख्ये अस्ति मनो मे।।ध्र०।। दीनार्तिनाशे स्वयंप्रकाशे। व्याप्तपंचकोशे, चैतन्याकाशे।।१।।

करधृतदंडे आनंदकरंडे। कृतित्रकांडे भालेंदु खंडे।।२।। सकलानंदे विरिहतभेदे। नाशकखेदे ईशवंद्यपादे।।३।। कालांतकाले करुणारसाले। आनंदालवाले त्रिभुवनपाले।।४।। माणिकमुक्ताहारे निगमाब्धिसारे। सकलांतरे जगन्मनोहरे।।५।।